जब दुनिया

28/5/2015

रेप के आरोपी को कैदियों ने पीटा, अस्पताल में मौत

- तीन दिन पहले हमीदिया अस्पताल में कराया गया था भर्ती
- मुलाकात में भतीजे से कहा था, मुझे यहां से जल्द निकालो, कैदी मारते हैं

भोपाल (नप्र)। सेंट्रल जेल में बंद रेप के आरोपी युवक मोहन (30) की बुधवार सुबह उपचार के दौरान मौत हो गई। उसे 23 मई को इलाज के लिए जेल से हमीदिया अस्पताल के जेल वार्ड में शिफ्ट किया गया था। उसके परिजनों का आरोप है कि मोहन के साथ जेल में मारपीट की गई थी, जिसकी वजह से उसकी हालत बिगड़ गई थी।

अस्पताल में भर्ती मोहन ने बुधवार सुबह करीब 5 बजे दम तोड़ दिया। सूचना मिलने पर अस्पताल पहुंचे उसके परिजनों ने आरोप लगाया कि मोहन अधमरी हालत में जेल से अस्पताल लाया गया था। मोहन के रिश्तेदार राजेश ने बताया कि अस्पताल में भर्ती होने की सूचना पर वह जेल वार्ड पहुंचा था। लेकिन काफी मिन्नतें करने के बाद भी पुलिस ने उसे मोहन से मिलने नहीं दिया गया। मोहन के भतीजे गोलू ने बताया कि वह चाचा से मिलने अस्पताल पहुंचा था, तो उनकी हालत काफी खराब थी। >> शेष पेज 13 पर

मुझे यहां से निकालो नहीं तो ये मार डालेंगे

गोलू ने बताया कि भर्ती होने के पहले एक दिन वह चाचा से मिलने जेल पहुंचा था। तब चाचा ने कहा था कि मुझे यहां से जल्दी निकालो कैदी मेरे साथ बहुत मारपीट करते हैं। खाना भी नहीं खाने देते।

Hindustan Times

28/5/15

TIKAMGARH CASE SHOWS POLICE INSENSITIVENESS TOWARDS JUVENILES

The death of a 13-year-old boy in Tikamgarh has brought to the fore the lack of sensitivity among policemen in dealing with juveniles. The boy was taken away from his house by the police and illegally detained in the police station for three days. He was allegedly beaten up in custody under the suspicion of stealing a handbag. After he was released, he allegedly immolated himself and succumbed to his burns. The boy's father says his son was too scared of the police and took the extreme step. People in the town were angry after the boy's death and they blocked the traffic, demanding action. The police has now ordered an inquiry. The list of accusations - threat, torture and illegal detention - are serious enough to take action against the policemen. Shouldn't the police take a serious note of it, when it keeps organising events to increase sensitivity among policemen towards minors, women and other weaker sections?